DR. RANJEET KUMAR
Dept. Of History
H. D. Jain College Ara
M.A , sem.- 4, EC-1, unit-3

महिला एवं सामाजिक सुधार आंदोलन :

भारतीय समाज का इतिहास केवल राजाओं और युद्धों का इतिहास नहीं है, बल्कि यह सामाजिक संरचना, परंपराओं, कुरीतियों और सुधारों का भी इतिहास है। लंबे समय तक भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति जटिल और विरोधाभासी रही। एक ओर उन्हें देवी के रूप में पूजा गया, तो दूसरी ओर सामाजिक जीवन में उन्हें अनेक बंधनों में जकड़ दिया गया। शिक्षा, संपत्ति, स्वतंत्र निर्णय और सार्वजनिक जीवन में भागीदारी के अवसर सीमित थे।

19वीं शताब्दी में जब आधुनिक शिक्षा, प्रिंटिंग प्रेस और पश्चिमी विचारधाराएँ भारत में पहुँचीं, तब सामाजिक जागरण की प्रक्रिया शुरू हुई। इसी दौर में महिला सुधार आंदोलन ने जन्म लिया। यह आंदोलन केवल महिलाओं के अधिकारों के लिए नहीं था, बल्कि संपूर्ण समाज को कुरीतियों से मुक्त करने का प्रयास था।

महिला एवं सामाजिक सुधार आंदोलन का उद्देश्य था —

सती प्रथा का उन्मूलन

बाल विवाह का विरोध

विधवा पुनर्विवाह को मान्यता

महिला शिक्षा का प्रसार

पर्दा प्रथा और बहुविवाह जैसी कुरीतियों का विरोध

संपत्ति और कानूनी अधिकारों की स्थापना

यह आंदोलन धीरे-धीरे राष्ट्रीय आंदोलन से जुड़ गया और स्वतंत्र भारत में महिलाओं के अधिकारों की संवैधानिक मान्यता तक पहुँचा।

2. प्राचीन और मध्यकाल में महिलाओं की स्थिति

(क) वैदिक काल

वैदिक काल में महिलाओं की स्थिति अपेक्षाकृत बेहतर मानी जाती है। वे शिक्षा प्राप्त करती थीं, यज्ञों में भाग लेती थीं और दार्शनिक चर्चाओं में शामिल होती थीं। गार्गी और मैत्रेयी जैसी विदुषियों का उल्लेख मिलता है।

(ख) उत्तर वैदिक और मध्यकाल

समय के साथ सामाजिक संरचना कठोर होती गई। बाल विवाह, सती प्रथा, पर्दा प्रथा और स्त्री शिक्षा पर प्रतिबंध बढ़ने लगे। मुस्लिम शासन काल में भी पर्दा प्रथा का प्रसार हुआ। महिलाओं की स्वतंत्रता सीमित हो गई।

3. 19वीं शताब्दी का सामाजिक जागरण

19वीं शताब्दी में ब्रिटिश शासन के दौरान भारतीय समाज में कई परिवर्तन हुए।

अंग्रेजी शिक्षा का प्रसार

पश्चिमी विचारों का प्रभाव

समाचार पत्रों का विकास

मिशनरियों की सक्रियता

इन सभी कारणों से भारतीय बुद्धिजीवियों में आत्मचिंतन की भावना उत्पन्न हुई। उन्होंने समाज की कुरीतियों को चुनौती दी।

4. सती प्रथा का उन्मूलन

सती प्रथा एक अमानवीय परंपरा थी, जिसमें पति की मृत्यु के बाद पत्नी को उसकी चिता पर जला दिया जाता था।

प्रमुख सुधारक

राजा राममोहन राय ने सती प्रथा के खिलाफ जोरदार अभियान चलाया। उन्होंने इसे अमानवीय और धर्मविरुद्ध बताया।

उनके प्रयासों से गवर्नर जनरल लॉर्ड विलियम बेंटिक ने 1829 में सती प्रथा को गैरकानूनी घोषित कर दिया।

यह भारतीय सामाजिक सुधार का पहला बड़ा कानूनी कदम था।

5. विधवा पुनर्विवाह आंदोलन

विधवाओं की स्थिति अत्यंत दयनीय थी। उन्हें सामाजिक अपमान, सफेद वस्त्र, सिर मुंडन और कठोर जीवन जीना पड़ता था।

प्रमुख नेता

ईश्वरचंद्र विद्यासागर ने विधवा पुनर्विवाह के समर्थन में आंदोलन चलाया।

उनके प्रयासों से 1856 में “हिंदू विधवा पुनर्विवाह अधिनियम” पारित हुआ।

6. बाल विवाह विरोधी आंदोलन

बाल विवाह से लड़कियों का शारीरिक और मानसिक विकास बाधित होता था।

प्रमुख सुधारक

केशवचंद्र सेन और अन्य सुधारकों ने इसके खिलाफ अभियान चलाया।

1929 में “शारदा अधिनियम” (Child Marriage Restraint Act) पारित हुआ, जिसने विवाह की न्यूनतम आयु तय की।

7. महिला शिक्षा का प्रसार

महिला शिक्षा को सामाजिक सुधार की नींव माना गया।

अग्रणी व्यक्तित्व

सावित्रीबाई फुले ने लड़कियों के लिए पहला आधुनिक स्कूल खोला।
उनके पति ज्योतिराव फुले ने भी उनका समर्थन किया।

बंगाल में पंडिता रमाबाई ने महिला शिक्षा और विधवाओं के पुनर्वास के लिए कार्य किया।

8. ब्रह्म समाज और आर्य समाज की भूमिका

ब्रह्म समाज

ब्रह्म समाज ने सती प्रथा, बहुविवाह और जाति प्रथा का विरोध किया।

आर्य समाज

आर्य समाज, जिसकी स्थापना स्वामी दयानंद सरस्वती ने की, ने वेदों की ओर लौटने का आह्वान किया और महिला शिक्षा को बढ़ावा दिया।

9. दक्षिण भारत में सुधार आंदोलन

पेरियार ई. वी. रामासामी ने तमिलनाडु में स्त्री अधिकार और जाति उन्मूलन के लिए कार्य किया।

केरल में नारायण गुरु और अन्य समाज सुधारकों ने समानता और शिक्षा का प्रचार किया।

10. राष्ट्रीय आंदोलन और महिलाओं की भागीदारी

महिला सुधार आंदोलन धीरे-धीरे स्वतंत्रता संग्राम से जुड़ गया।

प्रमुख महिला नेता

सरोजिनी नायडू

कस्तूरबा गांधी

एनी बेसेंट

इन महिलाओं ने सत्याग्रह और आंदोलन में सक्रिय भागीदारी की।

11. स्वतंत्रता के बाद महिला अधिकार

1947 के बाद भारतीय संविधान ने महिलाओं को समान अधिकार दिए।

संवैधानिक प्रावधान

समानता का अधिकार (अनुच्छेद 14)

भेदभाव का निषेध (अनुच्छेद 15)

समान अवसर (अनुच्छेद 16)

दहेज निषेध अधिनियम, घरेलू हिंसा अधिनियम और कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न रोकथाम कानून जैसे अनेक कानून बनाए गए।

12. आधुनिक महिला आंदोलन

1970 के बाद भारत में नारीवादी आंदोलन ने गति पकड़ी।

दहेज हत्या के खिलाफ अभियान

बलात्कार कानून में संशोधन

पंचायतों में 33% आरक्षण

आज महिलाएँ राजनीति, विज्ञान, सेना और खेल के क्षेत्र में आगे बढ़ रही हैं।

13. प्रमुख उपलब्धियाँ

सती प्रथा समाप्त

विधवा पुनर्विवाह मान्य

बाल विवाह में कमी

शिक्षा दर में वृद्धि

राजनीतिक भागीदारी

14. चुनौतियाँ

दहेज प्रथा

लैंगिक भेदभाव

घरेलू हिंसा

वेतन असमानता

भ्रूण हत्या

15. निष्कर्ष

महिला एवं सामाजिक सुधार आंदोलन भारतीय समाज के इतिहास में एक महत्वपूर्ण अध्याय है। यह केवल कानून बनाने का प्रयास नहीं था, बल्कि मानसिकता बदलने की प्रक्रिया थी।

राजा राममोहन राय से लेकर सावित्रीबाई फुले और सरोजिनी नायडू तक अनेक व्यक्तित्वों ने समाज को नई दिशा दी। आज भी यह संघर्ष पूरी तरह समाप्त नहीं हुआ है, परंतु बदलाव स्पष्ट दिखाई देता है।

महिला सशक्तिकरण केवल महिलाओं का मुद्दा नहीं है, बल्कि यह समाज के विकास की आधारशिला है। जब महिलाएँ शिक्षित, सुरक्षित और आत्मनिर्भर होंगी, तभी राष्ट्र वास्तविक अर्थों में प्रगति करेगा।